Plot Construction

सारस्वत कवि कालिदास की कविता में मन्दाकिनी सा अम्लान प्रवाह, भागीरथी सी निर्मलता तथा प्रकृतिनटी सा वैचित्र्य निहित है। उस रससिद्ध कवि ने काव्य के माध्यम से शिवम् की आराधना, सत्यम् की प्रतिष्ठा तथा सुन्दरम् की सृष्टि की है। सर्वश्रेष्ठ चरित्र चित्रण, घटनाओं का सफल सम्मिश्रण, न्यायिक केन्द्र बिन्दु का चुनाव, मानव-प्रकृति का सूक्ष्म अवलोकन, प्रेम का पूर्ण अङ्कन, प्रकृति का मनमोहक वर्णन, गंभीर एवं स्निग्ध भाषा, मधुर एवं सुबोध्य शब्दों का चयन, अद्वितीय उपमाएँ ये सभी कालिदास की अभूतपूर्व लेखनी के परिचायक हैं।

'मेघदूत' कवि की बौद्धिक प्रतिभा का तृतीय कृतित्व है। मन्दाक्रान्ता छन्द में निबद्ध यह खण्डकाव्य विश्वसाहित्य में सर्वमधुर गीति-काव्य है। दूतकाव्यों की परम्परा में भी यह सर्वश्रेष्ठ है। पूर्वमेघ तथा उत्तरमेघ इन दो भागों में विभक्त एक यक्ष की विरह-व्यथा की अभिव्यक्ति मेघदूत में है। इसके नायक-नायिका अर्द्धदैविक प्राणी हैं। नायक यक्ष अपने कर्त्तव्य में त्रुटि दिखाने के कारण अलकापुरी से निर्वासित होकर अपने विरह के दिन रामगिरि पर्वत पर काट रहा है। कालिदास ने इस यक्ष की वेदना के साथ रामगिरि से अलकापुरी तक के मेघ-मार्ग के वर्णन में मानो जीवन्तता उतार दी है।

आधार — मेघदूत की इस कथा का आधार ब्रह्मवैवर्त पुराण की हेममाली विशालाक्षी कथा को मानना तथ्यपूर्ण है। कालिदास ने अपनी रुचि के अनुसार इसमें कुछ परिवर्तन परिवर्धन कर मेघदूत की रचना की है।

प्रेरणास्रोत — इस संदेशकाव्य की प्रेरणा ऋग्वेद, रामायण, नलोपाख्यानम्, स्वप्नवासवदत्तम् तथा मृच्छकटिकम् से ली गई है।

ऋग्वेद में इन्द्र ने एक लुतिया सरमा को पणियों के पास संदेश लेकर भेजा, रामायण में राम ने हनुमान को विरह संदेश पहुँचाने का कार्यभार दिया। नलोपाख्यानम् में नल ने चिड़िया को अपने प्रेम का संदेश-वाहक बनाया। मेघदूत में कालिदास ने संदेशकाव्यों की परम्परा को कायम रखते हुए संदेश तो भेजा किन्तु इस परम्परा को तोड़कर सर्वप्रथम चेतन के स्थान पर किसी अचेतन अर्थात् मेघ को संदेशवाहक बनाया।

महामहोपाध्याय मल्लिनाथ का यह कथन पूर्णतः सत्य है कि हनुमान का संदेशवाहक बनना ही मेघदूत का प्रेरणास्रोत है और इस बात का प्रमाण उत्तरमेघ का यह श्लोक है —

इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा
त्वामुत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया वीक्ष्य सम्भाव्य चैव।
श्रोष्यस्मात्परमवहिता सौम्य सीमन्तिनीनां
कान्तोदन्तः सुहृदुपगतः संगमात्किञ्चिदूनः॥

रामायण में हनुमान का इच्छानुसार रूप धारण कर हाथी और पर्वत की चोटी के समान वर्णित है। हनुमान सुमेरुपर्वत उपत्यकास्थित लङ्का में सांध्य-बेला में प्रविष्ट हो संपूर्ण नगर का भ्रमण करते हुए अशोकवाटिका पहुँचते हैं। इस भ्रमण के क्रम में हनुमान ने सुवर्णकारी लंका की अतुलनीय छटा का वर्णन किया है। वहाँ की सुन्दरियों का वर्णन किया है वहाँ की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं का मनोहारी चित्रण किया है। ठीक उसी प्रकार मेघ ने भी कैलास पर्वत के ऊपर स्थित अलकापुरी में सांध्यबेला में प्रवेश किया है। अलका के हृदयग्राही सौन्दर्य का, वहाँ की अद्भुतपूर्व सुन्दरियों का, वहाँ के गगनचुम्बी भवनों का वर्णन करता हुआ मेघ अंत में यक्ष के घर पहुँचता है।

जिस प्रकार रामायण में सीता की विरह व्याकुल अवस्था का वर्णन किया गया ठीक उसी प्रकार कालिदास ने यक्षपत्नी की मार्मिक अवस्था का वर्णन किया है। इसमें तो इतना साम्य है कि इस बात की संभावना कि कालिदास ने मेघदूत की प्रेरणा वाल्मीकि रामायण से ली है निश्चय में परिणत हो जाती है।

जिस प्रकार हनुमान ने लङ्का में प्रवेश करते समय लघु रूप धारण किया था ठीक उसी प्रकार यक्ष का संदेश सुनाने के लिए मेघ ने लघु रूप धारण किया है। राम का संदेश सुनाते समय हनुमान ने अभिज्ञान हेतु कुछ ऐसी बातें बताई जो राम-सीता के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। उसी प्रकार यक्ष का संदेश सुनाते समय वक्ता मेघ स्वयं को यक्ष का मित्र साबित करने के लिए कुछ ऐसी बातें कहता है जो यक्ष-यक्षिणी के अतिरिक्त कोई नहीं जानता है।

पत्नी से बिछड़कर यक्ष ने अपने विरह-व्यथित दिन रामगिरि के पर्वत पर बिताए थे जबकि इसी समान स्थिति में राम ने पारसबन के पर्वतों को अपने संताप का साक्षी बनाया था। जिस तरह यक्ष प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर विस्मय-विमुग्ध हो जाता है और 'आषाढस्य प्रथम दिवसे' उसकी आठ मास की संचित विरह-वेदना फूट पड़ती है उसके बाद वह चौमासे के खत्म होने का इंतजार करता है ऐसा ही राम के साथ भी हुआ था।

यक्ष ने मेघ को रामगिरि पर्वत से अलकापुरी पहुँचने का मार्ग बतलाया है। इस मार्ग-प्रदर्शन में मार्ग के प्राकृतिक सौन्दर्य का अति रंगीन वर्णन किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि कालिदास ने इस बात की प्रेरणा भारद्वाज ऋषि के प्रयाग से चित्रकूट तक के मार्ग-वर्णन से ली है या फिर लङ्का पर विजय के पश्चात जब राम पुष्पक विमान पर वायुमार्ग से दक्षिण से उत्तर की ओर आ रहे हैं तब उन्होंने प्रकृति के अपूर्व सौन्दर्य का तथा मार्ग में अवस्थित

अनेक स्थानों का मोहक चित्रण किया है, ले ली है। रामायण में एक स्थान पर बगुले पाँत बाँधे आकाश में विचर रहे हैं जो कमल के फूलों की माला सदृश प्रतीत हो रहे हैं, क्या मेघदूत की निम्न पंक्तियों की प्रेरणा इसी से नहीं ली गई —

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नुदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयन सुभगं खे भवन्तं बलाकाः॥

रामायण में वर्षा ऋतु का वर्णन है। वर्षा ऋतु के जल से भरे हुए बादल धीरे-धीरे उड़ते हैं और ऊँचे पर्वतों से टकराकर वर्षा कर देते हैं। 'मेघदूत' में भी जल से भरे बादल धीरे-धीरे उड़ते हैं और पर्वतों पर विश्राम करते हैं।

विन्ध्याचल के चरणप्रान्त पर बिखरी नर्मदा नदी हाथी के शरीर पर बनाई गई शृङ्गार रेखा के समान प्रतीत हो रही है रामायण ऊपर से देखने पर नदियाँ धागों के समान लग रही हैं।

कालिदास ने अलकापुरी का प्रदर्शन करते ऐसे नगर के रूप में किया है जो सुवर्णमयी है जहाँ सदैव खुशी और आनन्द है। रामायण की सुवर्णनगरी लङ्का भी समान रूप से प्रदर्शित है।

मेघदूत तथा रामायण दोनों में कवि ने 'श्यामा' शब्द का प्रयोग उस कन्या के लिए किया है जिसने यौवनावस्था को प्राप्त कर लिया है।

इस प्रकार यह स्पष्टतः लक्षित है कि मेघदूत की परिकल्पना वाल्मीकि रामायण से की प्रेरणा से की गई है।

मेघदूत की कुछ कल्पनाएँ भास से भी मिलती हैं। यथा - भास ने अपने नाटक स्वप्नवासवदत्तम् में कहा है कि सुख-दुःख रथ के पहिए के समान है सदैव एक तरह का समय नहीं रहता। दुःख का समय बीतते भी देर नहीं लगती। और कालिदास ने भी कहा है —

करत्यान्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥

शूद्रक ने अपने नाटक मृच्छकटिकम् में भी यह बात कही है।

अतः सम्पूर्ण आकलन के पश्चात् यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि कालिदास की कल्पना पर भास तथा शूद्रक का थोड़ा प्रभाव है किन्तु ~~स्वकल्पना~~ स्पष्टतया इस रचना की कल्पना का केन्द्र बिन्दु रामायण ही है।